जैन दर्शन की सैद्धान्तिक मान्यताओं के सन्दर्भ में पुनर्जन्म के वैज्ञानिक अध्ययन की समीक्षा

मुनि श्री महेन्द्र कुमार

[विर्जिनिया (अमेरिका) के सुप्रसिद्ध मनश्चिकित्सक डॉ० ईयान स्टीवनसन पिछले पन्द्रह वर्षों से पुनर्जन्म के वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर अनुसंधान-कार्य कर रहे हैं। इस संदर्भ में उन्होंने विश्व की अनेक बार यात्राएं की हैं और पूर्वजन्म सम्बन्धी घटनाओं का अध्ययन किया है। प्रस्तुत लेख के लेखक ने उनके द्वारा किये गये कार्य का सर्वांगीण समावलोकन करते हुए जैन दर्शन की सैद्धान्तिक मान्यताओं के संदर्भ में उसकी समीक्षा की है। जैन विद्या परिषद् के सप्तम अधिवेशन पर यह शोध-पत्र पढ़ा गया था।—सम्पादक]

जैन दर्शन आत्मवादी और कर्मवादी दर्शन है।[1] आत्मा और कर्म के अस्तित्व के साथ जैन दर्शन पुनर्जन्म के सिद्धान्त को भी स्वीकार करता है।[2] इधर परामनोविज्ञान के क्षेत्र में गवेषणारत वैज्ञानिकों के द्वारा पुनर्जन्म (Reincarnation) के विषय में वैज्ञानिक पद्धतियों के आधार पर व्यवस्थित अध्ययन किया गया है।[3] प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है—पुनर्जन्म-सम्बन्धी किये गये वैज्ञानिक अध्ययन को प्रस्तुत कर जैन दर्शन की सैद्धान्तिक मान्यताओं के संदर्भ में उनकी समीक्षा करना।

तत्त्व दर्शन के क्षेत्र में :

तत्त्व दर्शन (metaphysics) के क्षेत्र में अस्तित्ववादी या आस्तिक दर्शन आत्माओं को चैतन्यशील, जड़ पदार्थ में सर्वथा स्वतंत्र एवं अनश्वर (अर्थात् मृत्यु के पश्चात् भी अपने अस्तित्व को बनाये रखने वाला) स्वीकार करते हैं, जबकि भौतिकवादी या नास्तिक दर्शन आत्मा की स्वतन्त्र सत्ता को स्वीकार नहीं करते तथा मृत्यु के पश्चात भी उसके अस्तित्व को अस्वीकार करते हैं। न्याय-शास्त्र एवं दर्शन-शास्त्र के ग्रन्थों में इन दोनों अभिमतों के प्रतिपादकों के पारस्परिक वाद-विवाद की विस्तृत चर्चाएं उपलब्ध होती हैं। ये चर्चाएं तर्क, अनुमान आदि प्रमाण के आधार पर की गयी हैं। दोनों पक्षों की ओर से अपने-अपने अभिमत को स्थापित कर विपक्ष को खण्डित करने की चेष्टा की गई है।

तार्किक आधारों पर खण्डन-मण्डन का यह क्रम प्राचीन काल में ही नहीं, आधुनिक दार्शनिकों में भी चला है। आधुनिक पाश्चात्य दार्शनिक डॉ० मेकटेगार्ट जहां पुनर्जन्म के पक्षधर हैं, वहां प्रिंगलपेटिसन आदि उनके विपक्षी हैं।[4] डॉ० टी० जी० कलघटगी ने तो इसके तार्किक प्रामाण्य को असंभव और अनपेक्षित माना है। उनके अनुसार यह विशिष्ट द्रष्टाओं के उच्चतम ज्ञान और अनुभूति के द्वारा व्यक्त सिद्धान्त है।[5] पर डा० मेकटेगार्ट ने पुनर्जन्म की वास्तविकता को तार्किक आधारों पर प्रमाणित करने की चेष्टा की है। उनके अनुसार यदि यह सिद्ध हो जाता है कि वर्तमान जीवन के पूर्व और पश्चात् भी जीवन है, तो पुनर्जन्म के साथ अनश्वरता का सिद्धांत भी अपने आप सिद्ध हो

१. से आयावाई, कम्मावाई, किरियावाई, लोयावाई।—आयारो, १/५

२. वही, १/१ से ४। सैद्धांतिक प्रमाणों के अतिरिक्त घटनाओं के उल्लेखों से जैन आगम भरे पड़े हैं। युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी की मान्यता के अनुसार भगवान् महावीर जाति-स्मरण-ज्ञान कराने की पद्धति से साधकों को श्रद्धावान् बनाते थे। —आयारो, टिप्पणी, पृ० ५३

३. See Reincarnation—A Selected Bibliography—Compiled in the Division of Parapsychology, University of Verginia.

४. देखें, डॉ० टी० जी० कलघटगी, कर्म एण्ड रिबर्थ, पृ० ५४ से ६५, एल० डी० इंस्टीट्यूट आफ इण्डोलोजिकल रिसर्च, अहमदाबाद।

५. वही, पृ० ७५ "The doctrine of Karma and consequent principle of Rebirth are expressions of highest knowledge and experience of the seers. Its logical justification is neither possible nor necessary".

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाता है।[1] पुनर्जन्म के विपक्षियों द्वारा सबसे प्रबल तर्क यही दिया गया है कि पुनर्जन्म की कोई स्मृति हमें नहीं है।[2] प्रिंगल-पेटिसन ने डॉ० मेकटेगार्ट की इस मान्यता को कि "आत्मा एक शाश्वत द्रव्य है जिसमें त्रैकालिक अस्तित्व सदा अमर बना रहता है; समर्थ तर्काधारित मानने से इसलिए इन्कार किया है कि पूर्वजन्म की स्मृति के अभाव में आत्मा की सततता की अनुभूति नहीं होती।[3] यदि पूर्वजन्म की स्मृति वास्तविक तथ्य के रूप में प्रमाणित हो जाती है, तो पुनर्जन्म का सिद्धान्त स्वतः सिद्ध हो जाता है। डा० कलघटगी ने पूर्वजन्म की स्मृति के प्रमाण को पुनर्जन्म की मान्यता को सिद्ध करने के लिए यथार्थ माना है।[4] इस प्रकार कहा जा सकता है कि पूर्वजन्मपरक स्मृति की वास्तविकता अस्तित्ववादी (आस्तिक) दर्शन के लिए एक ऐसा सबल एवं प्रत्यक्ष प्रमाण बन जाता है जिसके लिए फिर तर्क या अनुमान की आवश्यकता नहीं रह जाती।

वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण करने पर "पुनर्जन्मवाद" का प्रामाण्य दो बातों पर आधारित हो जाता है—

१. प्रथम तो पूर्वजन्म-स्मृति की घटनाएं वास्तविक हैं या नहीं—इसे प्रमाणित करना।

२. यदि ये घटनाएं वस्तुतः ही घटित हैं, तो इन घटनाओं की व्याख्या करने में पुनर्जन्मवाद की परिकल्पना (hypothesis) ही केवल सक्षम है, इसे प्रमाणित करना।

यदि इन दोनों बातों को सिद्ध कर दिया जाता है, तो आत्मा का स्वतन्त्र एवं शाश्वत अस्तित्व एक वैज्ञानिक तथ्य के रूप में स्थित हो जाता है।

परामनोविज्ञान के क्षेत्र में :

सर्वप्रथम तो हमें इस बात की ओर ध्यान देना होगा कि पूर्वजन्म-स्मृति की घटनाओं की वास्तविकता असन्दिग्ध है या नहीं। सौभाग्य से पिछले १५ वर्षों से इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया है। विश्व के वैज्ञानिकों का ध्यान काफी अर्से से इन घटनाओं की ओर खिंच चुका था। विश्व में अनेक स्थानों पर परामनोविज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिक पद्धति से शोध कार्य करने के लिए जो शोध-संस्थान स्थापित हुए हैं, उनमें इन पूर्वजन्म-स्मृति की घटनाओं का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जा रहा है। पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालय, क्लार्क विश्वविद्यालय (वोरसेस्टर, मेसेच्यूसेट्स), स्टेण्डफोर्ड विश्वविद्यालय, हारवार्ड विश्वविद्यालय, ड्यूक विश्वविद्यालय, लिंडन विश्वविद्यालय, उट्रेष्ट विश्वविद्यालय (हॉलेण्ड), केम्ब्रिज विश्वविद्यालय, फ्राईबर्ग विश्वविद्यालय (प० जर्मनी), पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय, सेंट लोसेफ्ज कॉलेज (फिलाडेलफिया), वेलेण्ड कॉलेज (प्लेनव्यू, टैक्सास), नेशनल लिटोरल विश्वविद्यालय (रोजादियों, आर्जेन्टिना) लेनिनग्राड स्टेट विश्वविद्यालय (यू० एस० एस० आर०), किंग्स कॉलेज विश्वविद्यालय (हेलिफैक्स) तथा विर्जिनिया विश्वविद्यालय के अन्तर्गत विश्वके बीसों चोटी के वैज्ञानिक, मनोचिकित्सक एवं मनोविज्ञानविद् परामनोविज्ञान के क्षेत्र में शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि से कार्य कर रहे हैं।[5]

पूर्वजन्म-स्मृति या ऐसी अन्य परा-सामान्य घटनाओं का सर्वेक्षण, सत्यता की जांच, तथ्यों का विश्लेषण, सम्बन्धित साक्षियों के परीक्षण आदि का निष्पक्ष एवं वस्तु-सापेक्ष (ऑब्जेक्टिव) अध्ययन किया जा रहा है।

---

१. Dr. T. M. Mctaggart, Some Dogms of Religion, पृ० ११२-१३, "The most effective way of proving that the doctrine of pre-existence is bound up with the doctrine of immortality would be to prove directly that the nature of man was such that it involved a life both before and after the present life."

२. See Mctaggart, वही पृ० १२४. "We have no memory of the past life and there seems to be no reason to expect that we shall remember our present life during subsequent lives. Now an existence that is cut off into separate lives, in none of which memory extends to previous life, may be thought to be of no practical value......Rebirth of a person, without a memory of the previous life would be equal to annihilation of that person."

३. Pringle-Pettison, 'Idea cf Immortality' पृ० १२७ "Dr. Mctaggart's supposition that self is a metaphysical substitute in which personal identity dies is not an adequate explanation for the continuity of succesive lives, as continuity is never realised owing to the absence of memory."

४. Dr. Kalghatgi, 'Karma and Rebirth', पृ० ६० "Apart from the investigations of the modern psychical research and its implications on the problem of rebirth, we have evidence to show that in some cases there is not loss of memory of the past life."

५. 'Parapsychology : Sources of Information' (compiled under the auspices of the American Society for Psychical Research) by Rhea A. White and Laura A. Dale, The Scarecrow Press, Inc. Metuchen. N.J., U.S.A., 1973.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदाहरणस्वरूप हम विर्जिनिया विश्वविद्यालय के अन्तर्गत चल रहे कार्य की चर्चा यहां कर रहे हैं। विर्जिनिया विश्वविद्यालय के अन्तर्गत 'स्कूल ऑफ मेडिसिन' में सायक्याट्री विभाग का 'परामनोविज्ञान संभाग' व्यवस्थित रूप से इस शोध कार्य में लगा हुआ है। डॉ० ईयान स्टीवनसन, एम० डी०, स्वयं एक सुप्रसिद्ध मनोचिकित्सक हैं, तथा 'कार्लसन प्रोफेसर ऑफ सायक्याट्री' के रूप में इस विभाग का निदेशन कर रहे हैं। डॉ० स्टीवनसन एवं उनके निदेशन में शोधरत दल विश्व के विभिन्न देशों में घटित पूर्वजन्म-स्मृति की घटनाओं के सर्वांगीण अध्ययन एवं शोध में संलग्न हैं। भारत के अतिरिक्त सिलोन, बर्मा, थाईलैण्ड, लेबनान, ब्राजील, अलास्का आदि देशों से उक्त प्रकार की घटनाओं की जानकारी उन्हें प्राप्त हुई हैं तथा इस सिलसिले में अनेक बार इन देशों की यात्राएं की हैं।[1] डॉ० स्टीवनसन मनोविज्ञान (सायकोलोजी) के अभिनव विश्लेषणों और सिद्धान्तों के प्रकाण्ड विद्वान् हैं। उनका समग्र अध्ययन एक गहरी और पैनी दृष्टि लिए हुए है। घटनाओं के जांच कार्य में उनमें वकील का चातुर्य और तर्क की प्रबलता स्पष्ट परिलक्षित होती है। विभिन्न देशों की संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास, भूगोल आदि से सम्बन्धित अपेक्षित ज्ञान की मौलिक एवं पूर्ण जानकारी भी वे रखते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में डॉ० स्टीवनसन का इतना विस्तृत परिचय इस दृष्टि से दिया जा रहा है कि उनके द्वारा किया गया घटनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किस प्रकार के व्यक्ति द्वारा किया गया है, इससे पाठक परिचित हो सकें।

डॉ० स्टीवनसन ने इस विषय में लिखना सन् १९६० से प्रारम्भ किया था। वैसे, इस विषय पर अन्य गवेषक एवं लेखक इससे पहले भी गवेषणा कर चुके हैं और काफी कुछ लिख चुके हैं। जैसे—ई० डी० वाकर (E. D. walker) द्वारा लिखित ग्रन्थ 'रिइनकारनेशन: ए स्टडी ऑफ फारगोटन ट्रुथ' का प्रकाशन इसमें सर्वप्रथम है, जो सन् १८८८ में पहली बार प्रकाशित हो चुका था। सन् १९११ तथा १९६५ में इसे पुनः प्रकाशित किया गया। इसके बाद पिछले शतक में बीसों ग्रन्थ तथा पचासों लेख इस विषय में प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ० स्टीवनसन द्वारा लिखित "दी एविडंस फार सरवाइवल फ्रॉम क्लेइम्ड मेमोरिज ऑफ एट फॉर्मर इनकारनेशंस" सन् १९६० में जनरल ऑफ अमेरिकन सोसायटी ऑफ सायकिकल रिसर्च में प्रकाशित होकर सन् १९६१ में पुस्तक रूप में इंग्लैंड से प्रकाशित हुआ। इसके बाद सन् १९७६ में बीस घटनाओं के सम्पूर्ण एवं समीक्षात्मक अध्ययन पर आधारित उनका सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ "ट्वेण्टी कैसेज सजेस्टिव ऑफ रिइनकारनेशन" प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात् भी समय-समय पर इस विषय में उनके लेख एवं पुस्तकें प्रकाशित होती रही हैं। इस दिशा में निरन्तर कार्य हो रहा है। घटनाओं में भी काफी वृद्धि हुई है। सन् १९६९-७० में दो वर्षों के अन्दर ही भारत में १०८ एवं बर्मा में ९० घटनाएं प्रकाश में आई हैं। उदाहरण स्वरूप ब्राजील की एक घटना का उल्लेख किया जा रहा है।

ब्राजील में अढ़ाई वर्ष की बालिका को पूर्वजन्म की स्मृति :

सन् १९१८, अगस्त की १४ तारीख को ब्राजील देश में डोम फेलिसियानो नामक एक छोटे गांव में रहने वाले एक परिवार में एक बालिका का जन्म हुआ। पिता एफ० व्ही० लौरेंज तथा माता ईदा लौरेंज ने उसका नाम मार्टा रखा। मार्टा अढ़ाई वर्ष की हुई थी, तब एक दिन वह अपनी बहिन लीला के साथ घर से थोड़ी दूर आए हुए एक नाले पर रह गई थी। यहां से वापिस घर लौटते समय उसने लीला से कहा—मुझे गोद में उठाकर ले चलो। जब पहले तू छोटी थी और मैं बड़ी थी, मैं तुझे गोद में उठाकर घुमाती थी। छोटी बहिन के मुंह से इस प्रकार की बात सुनकर बड़ी बहिन को हंसी आ गई। उसने पूछा—तुम बड़ी कब थीं!

मार्टा ने कहा—उस समय मैं इस घर में नहीं रहती थी। मेरा घर यहां से काफी दूर था। वहां अनेक गाय, बैल आदि हमारे घर पाले हुए थे तथा नारंगी के पेड़ थे। वहां कुछ बकरे जैसे पशु भी पाले हुए थे। पर वे बकरे नहीं थे।

इस प्रकार बातचीत करते हुए मार्टा और लीला जब घर पहुंची, लीला ने सारी बात अपने माता-पिता से कही। पिता ने मार्टा से कहा—जिस घर की तुम चर्चा कर रही हो, वहां हम कभी नहीं रहे।

मार्टा ने तुरन्त उत्तर दिया— उस समय आप हमारे माता-पिता नहीं थे, वे दूसरे थे।

छोटी बच्ची की पागल की सी बातें सुनकर उसकी एक अन्य बहिन ने मजाक में ही मार्टा से पूछा—तब फिर तुम्हारे घर एक छोटी हब्शी नौकरानी (लड़की) भी थी, जैसे अपने घर में अभी है।

मार्टा इस मजाक से बिलकुल भी बेचैन नहीं हुई। उसने कहा—ना, हमारे घर में जो हब्शी नौकरानी थी, वह काफी बड़ी थी। एक रसोईयन भी हब्शी थी तथा वह दूसरा एक हब्शी लड़का भी काम करता था। एक बार वह लड़का बेचारा पानी लाना भूल गया था, तब मेरे पिता ने उसे बहुत पीटा था।

---

१. डॉ० स्टीवनसन स्वयं अनेक बार भारत आये हैं तथा इन यात्राओं में उनसे व्यक्तिगत रूप से लंबी चर्चाएं भी हुईं। उन्होंने अपने अध्ययन और गवेषणा के आधार पर जो साहित्य प्रकाशित किया है, उसे गहराई से अध्ययन करने का अवसर भी प्राप्त हुआ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिता (एफ० ह्वी० लौरेंज) बोले—मेरी प्यारी बेटी मैंने तो कभी किसी हब्शी बच्चे को नहीं पीटा है।

मार्टा बोली—पर वह तो मेरे दूसरे पिताजी थे। ज्यों ही उस लड़के को पिताजी ने पीटना शुरू किया, वह लड़का मुझे बुलाता हुआ चिल्लाने लगा—अरे सिन्हा-जिन्हा। मुझे बचाओ। मैंने तुरन्त पिताजी से निवेदन किया—उसे छोड़ दो और फिर वह पानी भरने चला गया।

एफ० ह्वी० लौरेंज ने पूछा—तो क्या वह नाले पर पानी भरने चला गया।

मार्टा ने कहा—न पिताजी! वहां आसपास में कहीं नाला नहीं था, वह कुए से पानी लाता था। पिता ने पूछा—बेटी, वह सिन्हा-जिन्हा कौन थी! मार्टा ने कहा—वह तो मैं ही थी। मेरा दूसरा नाम भी था। मुझे मारिया भी कहते थे और एक नाम और भी था जो कि मुझे अभी याद नहीं है।

इसके पश्चात् तो मार्टा ने और भी अनेक बातें अपने पूर्वजन्म के सम्बन्ध में बताईं। उसने यह भी बताया कि उसको इस जन्म की माता ईदा लौरेंज उसके पूर्व जन्म में सखी थी! वह (सिन्हा-जिन्हा) अपनी सखी के घर आती जाती रहती थी और उस दौरान वह लीला को खिलाती थी तथा उसे गोद में उठाकर घुमाती थी। एफ० ह्वी० लौरेंज के पुत्र कार्लोस की वह (सिन्हा-जिन्हा) धर्म माता बनी थी। जब ईदा उसके घर आती तो वह उसके लिए काफी बनाती और फोनोग्राफ बजाती। उसके पूर्वजन्म के पिता आयु में एफ० ह्वी० लौरेंज से बड़े थे। लम्बी दाढ़ी रखते थे तथा बड़ी कर्कश आवाज में बोलते थे। उसकी शादी नहीं हुई थी, पर वह जिस पुरुष से प्रेम करती थी उसके पिताजी उसे पसन्द नहीं करते थे। उस पुरुष ने आत्म-हत्या कर ली। इसके बाद एक दूसरे व्यक्ति से उसका प्रेम हो गया। उसे भी उसके पिताजी पसन्द नहीं करते थे। इससे वह बहुत दुःखी और निराश हो गई। उसके पिता ने उसे खुश करने के लिए समुद्र-तटीय प्रदेश में घूमने-फिरने का कार्यक्रम बनाया जहां उसने शरीर के प्रति लापरवाह होकर ठंडी और नम हवा से अपर्याप्त वस्त्रों के साथ घूमना शुरू किया और उसके परिणाम-स्वरूप उसे टी० बी० की बीमारी हो गई। इस बीमारी के बाद कुछ ही महीनों में उसकी मृत्यु हो गई। जब वह मृत्यु-शय्या पर थी, उसकी प्यारी सखी ईदा उसके पास थी। उस समय उसने ईदा से बताया कि मैं जान-बूझकर बीमार हुई थी, मैं मरना चाहती थी। मरने के बाद में तुम्हारी पुत्री के रूप में पुनः जन्म लूंगी और बोलने जितनी उम्र होनेपर पूर्वजन्म की बातें तुम्हें बताऊंगी, जिससे तुम्हें विश्वास हो जाएगा कि सिन्हा-जिन्हा ही तुम्हारी पुत्री बनी है।

सिन्हा-जिन्हा की मृत्यु सन् १९१७ अक्टूबर माह में हुई थी, जिसके लगभग दस महीने पश्चात् अर्थात् १४ अगस्त १९१८ को मार्टा का जन्म हुआ था। मार्टा ने लगभग १२० बातें अपने पूर्वजन्म के सम्बन्ध में बताईं जिनमें से कुछ बातें तो ईदा (मार्टा की माता) और एफ०ह्वी०लौरेंज जानते थे। कुछ बातें ऐसी भी थी जिनका इनको पता नहीं था पर उसकी पुष्टि सिन्हा-जिन्हा के अन्य पारिवारिक सदस्यों ने की। सन् १९६२ में जब एक मनश्चिकित्सक एवं परामनोवैज्ञानिक डॉ० ईयान स्टीवनसन ने मार्टा से भेंट की, उस समय भी उसे अपने पूर्व-जन्म की अनेक बातें याद थीं।

ऐसी एक दो या दस बीस नहीं, बारह सौ से भी अधिक घटनाएं विश्व भर में विभिन्न देशों में प्रकाश में आई हैं।

डॉ० कलघटगी ने भी एक सन्त सद्गुरु केशवदासजी के द्वारा बताई गई दो घटनाओं का उल्लेख किया है। एक में इटली के एक डेन्टिस्ट डॉ० गेस्टोन द्वारा अपना पूर्वजन्म भारत में कांचीपुरम स्थित किसी मन्दिर के पुजारी के रूप में बताया तथा मन्दिर की सम्पूर्ण पूजा-विधि का ज्ञान होने का दावा किया तथा दूसरी घटना में न्यूयार्क में एक नीग्रो व्यक्ति ने स्वामी केशवदासजी की सभा में अपनी पूर्वजन्म की स्मृति के आधार पर "ललित सहस्रनाम" कण्ठस्थ रूप से सुनाना प्रारंभ किया तथा उसने भी अपना पूर्वजन्म भारत में बताया।[1] ऐसी ही दो घटनाएं मेरे व्यक्तिगत अनुभव में आई हैं। एक घटना में अहमदाबाद के एक बालक मनोज द्वारा अपने पूर्वजन्म के समग्र परिवार को पहचानने की बात सामने आई। मनोज ने, जो कि सात वर्ष का बालक था, अपने पूर्वजन्म की पत्नी तथा दो बच्चों के विषय में जानकारी दी तथा उन्हें इस जन्म में पहचान लिया। और मनोज के शरीर पर गोली के चिह्न भी हमने देखे, जो उसके बयान अनुसार उसके पिछले जन्म में लगी थी। मनोज का एक हाथ बड़े आदमी की तरह पूरी तरह मोटा और विकसित था तथा दूसरा हाथ साधारण बच्चे की तरह था। (गोली के निशान की चर्चा इसी पत्र में आगे की गई है।)

एक दूसरी घटना में जयपुर की एक लड़की अमिता (उम्र १० वर्ष) से साक्षात्कार हुआ जो अपनी छोटी उम्र से ही अपने को महारानी गायत्रीदेवी कॉलेज की एम० ए० की पोलिटिकल साइन्स विषय की छात्रा बताती थी। उसने अपने पुराने घर और परिवार को खोज निकाला तथा छत पर से गिरने के कारण अपनी मृत्यु का बयान दिया, जो जांच करने पर सही पाया गया।

---

१. टी० जी० कलघटगी, कर्म एण्ड रिबर्थ, पृ० ६०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गवेषणा की पद्धति :

सामान्य रूप से पूर्वजन्म की स्मृति छोटे बच्चों को होती है।[1] अढ़ाई-तीन वर्ष की अवस्था से लेकर आठ-दस वर्ष की अवस्था के बच्चे ही आमतौर पर इस क्षमता के धनी पाये गये हैं। कहीं-कहीं तो दस महीने की आयु में भी बच्चा यत्किंचित् अभिव्यक्ति देना शुरू कर देता है। आयु बढ़ने के साथ साधारणतया यह क्षमता क्षीण होती जाती है। अपवादरूप में बड़ी आयु वालों में भी पूर्वजन्म-स्मृति उपलब्ध होती हुई पाई जाती है।

आमतौर से पूर्वजन्म-स्मृति वाला बच्चा जिसे हम "जातक" (Subject) कह सकते हैं, जब बोलना सीख जाता है, तब वह अपने पूर्वजन्म के विषय में कुछ-कुछ बातें बताना शुरू कर देता है। प्रायः तो माता-पिता ऐसी बातों पर ध्यान ही नहीं देते या उसे केवल प्रलाप या बकवास समझ लेते हैं। पर, जब जातक अपनी बात को दोहराता ही रहता है या बल देता रहता है, तब माता-पिता या पारिवारिक लोगों का ध्यान उस ओर केन्द्रित होता है। बहुत बार तो स्वयं ही पूर्वजन्म के घटना-स्थल पर पहुंच जाते हैं तथा जातक द्वारा बताई गई बातों की सत्यता की जांच करते हैं। कभी-कभी ऐसा नहीं हो पाता। गवेषक लोगों तक जब ऐसी बात पहुंचती है, तब वे जांच हेतु जातक के घर पहुंच जाते हैं। वहां वे जातक का पूरा बयान ले लेते हैं। इसके अतिरिक्त भी जिन व्यक्तियों का सम्बन्ध घटना से होता है, उन सबके बयान ले लिए जाते हैं। फिर जिस स्थान में जातक अपना पूर्व जन्म आदि बताता है, वहां जाकर उन परिवार वालों के बयान लिए जाते हैं। बयानों के साथ-साथ गवेषक लोग प्रश्नों और प्रतिप्रश्नों के द्वारा भी तथ्य एकत्रित करते हैं। बयानों और साक्षियों के परीक्षण के पश्चात् जो तथ्य उभरते हैं, उन पर चिन्तन किया जाता है।

चिन्तन के लिए कई संभावनायें की जाती हैं। सबसे पहले तो धोखाघड़ी या पूर्व-नियोजित होने की संभावना को लेकर तथ्यों पर चिन्तन किया जाता है—सारे बयान, साक्षियों के उत्तर, घटनास्थलों की भौगोलिक परिस्थिति आदि के आधार पर यह निश्चित करना कठिन नहीं होता कि घटना वास्तविक है या धोखा देने के लिए घड़ी हुई है। अब तक जिन घटनाओं की जांच की गई है, उसमें धोखा-धड़ी की घटनाएं नगण्य संख्या में पाई गई हैं।[2]

दूसरी संभावना यह की जाती है कि दोनों परिवारों के बीच प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी प्रकार का संबंध है या नहीं। जहां इस प्रकार की संभावना होती है, वहां पूर्वजन्म संबंधी बातों को इस कसौटी पर कसा जाता है कि ये बातें वस्तुतः पूर्वजन्म-स्मृति पर आधारित हैं या वर्त्तमान जन्म में ही किसी माध्यम से ज्ञात की गई हैं। जहां दोनों परिवारों में सामान्य मित्र, संबंधी आदि होते हैं वहां इस बात को बहुत सूक्ष्मता से तोला जाता है।

जिन घटनाओं में उक्त संभावना का भी कोई स्थान नहीं रह जाता, वहां यह भी एक संभावना की जाती है कि टेलीपेथी (विचार-संप्रेषण या दूरज्ञान) की सहायता से कोई दूसरे व्यक्ति के जीवन की बात बताता हो। इस प्रकार जो भी अन्य सामान्य संभावना की जा सकती है, उसे पहले ध्यान में रखा जाता है, और उसके आधार पर ही अंतिम निष्कर्ष निकाला जाता है।

अब तक की जांच की गई अधिकांश घटनाओं में उक्त प्रकार की कोई भी संभावना सही नहीं पाई गई। इस आधार पर ही ऐसी घटनाओं को परासामान्य (पेरा नारमल) की कोटि में माना गया है।

पूर्वजन्म की अद्भुत बातें :

अढ़ाई तीन या पांच साल के बच्चे, जो पूर्वजन्म की स्मृति के आधार पर बातें बताते हैं, उनमें बहुत सी बातें काफी अद्भुत और आश्चर्यकारक होती हैं। सामान्यतया ऐसे बच्चे अपने पूर्वजन्म का नाम, गांव का नाम, माता-पिता या निकट पारिवारिक लोगों के नाम, अपने निवास स्थान संबंधी जानकारी आदि देते ही हैं, पर उसके साथ-साथ ऐसी गुप्त बातों का भी वे रहस्योद्घाटन करते हैं, जिसके विषय में उस मृतात्मा के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति को कुछ भी ज्ञात नहीं होता। जैसे—एक घटना में एक जातक (बिशनचंद) ने अपने पूर्वजन्म में पिता की ऐसी छिपी संपत्ति का पता बताया, जिसके विषय में किसी को पता नहीं था।

कुछ घटनाओं में ऐसी बातें भी जातक द्वारा बता दी जाती हैं, जिनकी जानकारी केवल एक ही अन्य व्यक्ति को होती है। जैसे अलास्का में घटित एक घटना में अपने पूर्वजन्म में जातक (विलियम जार्ज) ने अपनी पुत्रवधु को एक घड़ी दी थी जिसके विषय में और किसी को पता नहीं था। वर्त्तमान जन्म में उस घड़ी को जातक ने पहचान लिया।

---

१. साधना द्वारा या हिप्नोसिस द्वारा भी पूर्वजन्म-स्मृति-ज्ञान उत्पन्न कराया जा सकता है, ऐसी घटनाएं भी मिलती हैं। के० एन० जयतिलक ने बौद्ध त्रिपिटकों में प्राप्त जातिस्मृति की घटनाओं की प्रामाणिकता की पुष्टि में उक्त घटनाओं का उल्लेख किया है। देखें—अर्ली बुद्धिस्ट थ्योरी ऑफ नॉलेज, पृ० ४५९

२. Twenty Cases Suggestive of Reincarnation, पृ० २१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्वजन्म की स्मृति वाले जातकों में सामान्यतया असामान्य व्यवहार पाया जाता है। ऐसे अधिकांश जातक वर्त्तमान जन्म के वातावरण और पैतृक गुण-धर्मों के विपरीत वृत्तियों का प्रदर्शन करते हैं। जैसे—पूर्वजन्म में धनसंपन्न किन्तु वर्त्तमान में गरीब होने पर भी जातक धनसंपन्न व्यक्तियों की तरह व्यवहार करता है। पूर्वजन्म में मांसाहारी वर्त्तमान जन्म में निरामिष परिवार में जन्म लेने पर भी मांसाहार की रुचि रखता है। धार्मिकता की पूर्वजन्म की प्रवृत्ति प्रायः वर्त्तमान जन्म में भी असाधारण रूप से प्रकट होती हुई दिखाई देती है। शौकीनता और रुचि की विलक्षणता भी असामान्य रूप से वर्त्तमान जीवन में देखी जाती है। इन सब असामान्य व्यवहारों का सामान्य एवं ज्ञात तत्त्वों के आधार पर व्याख्यात्मक विश्लेषण नहीं किया जा सकता। कभी-कभी भारत जैसे देश में जहां जातिवाद का प्रबल प्रभाव है, जातक द्वारा अपनी पूर्वजन्म की जाति के संस्कार एवं तदनुरूप व्यवहार व आचरण प्रस्तुत होता हुआ दिखाई देता है। जैसे—जसवीर नामक एक बालक जो वर्त्तमान में 'जाट' है, अपने को पूर्वजन्म में ब्राह्मण बताता है और ब्राह्मण की तरह खाने-पीने, शुद्धि आदि के लिए आग्रह करता है। यहां तक कि अपने जाट माता-पिता के हाथों बनाया हुआ खाना खाने से वह इंकार करने लगा।

कुछ जातकों में बचपन से ही कुछ ऐसे कला-कौशल, शैक्षिक ज्ञान एवं भाषा ज्ञान पाये जाते हैं, जो स्पष्टतया उसके पूर्वजन्म में अर्जित गुणों के साथ संबंधित होते हैं। बिशनचंद की घटना में तबला बजाने की निपुणता तथा उर्दू का ज्ञान इसी बात का द्योतक है। इसी प्रकार ब्राजील की एक अन्य घटना में पाउलो नामक बच्चा तीन चार वर्ष की आयु में सिलाई कला में असामान्य दक्षता रखता था, जिसका संबंध उसके पूर्वजन्म के व्यक्तित्व के साथ जोड़ा जा सकता है, जिसमें वह एमिलिया नामक लड़की के रूप में था तथा इस कला में दक्ष था।

इन सब बातों के अतिरिक्त धार्मिक श्रद्धा या विश्वास, भय, सेक्सुअल ज्ञान, वैर-विरोध आदि भावनाओं की असामान्य प्रबलता की विद्यमानता भी ऐसे जातकों में पाई जाती है, जिनका वर्त्तमान जीवन के किसी सामान्य घटनाप्रसंग, वातावरण या जानकारी से कोई संबंध नहीं मिलता। जैसे रविशंकर नामक बालक (जातक) अपने वर्त्तमान जन्म में अपने पूर्वजन्म के हत्यारों से भय भी रखता है और उनके प्रति क्रोध भी करता है।

आधुनिक मनोविज्ञान जिन सिद्धांतों के आधार पर मनुष्य की मानसिक वृत्तियों और भावनाओं की व्याख्या प्रस्तुत करता है, वह उक्त असामान्य मनोवैज्ञानिक तथ्यों का कोई समाधान नहीं देता। प्रत्युत इन असामान्य मनोवृत्तियों और विलक्षणताओं के लिए पूर्वजन्म के संस्कारों की परिकल्पना अपने आप पूर्ण और बुद्धिगम्य समाधान प्रस्तुत करती है।

यद्यपि सामान्य रूप से पूर्वजन्म और वर्त्तमान जन्म में लैंगिक समानता पाई जाती है, फिर भी कुछ घटनायें (लगभग १० प्रतिशत) ऐसी भी सामने आई हैं, जिनमें जातक पूर्वजन्म में स्त्री होता है और वर्त्तमान जन्म में पुरुष बन जाता है या पूर्वजन्म में पुरुष होता है और वर्त्तमान जन्म में स्त्री बन जाता है। जैसे सिलोन में घटित एक घटना में ज्ञानतिलका नामक एक लड़की अपने को पूर्वजन्म में तिलकरत्न नामक लड़के के रूप में बताती है। ब्राजील में घटित एक घटना में पाउलो नामक एक बच्चा अपने को एमिलिआ नामक लड़की का पुनर्जन्म बताता है। ऐसे लैंगिक परिवर्तनों में जातक के वर्त्तमान जीवन में अपने पूर्वजन्म की लैंगिक विलक्षणता भी पाई गई है, जो मनोवैज्ञानिकों के लिए अवश्य ही प्रश्नचिह्न है।

सबसे अधिक आश्चर्यजनक एवं अव्याख्येय बात ऐसी घटनाओं में पाई जाती है, वह है—वर्त्तमान जीवन में जातक के शरीर पर पाये जाने वाले विचित्र चिह्न या शारीरिक अपूर्णता जो जन्म से ही जातक के शरीर में पाई जाती है और जिनका संबंध उसके अपने पूर्वजन्म में घटित घटनाओं के साथ बताया जाता है। जैसे—रविशंकर नामक बालक के शरीर में गर्दन पर एक दो इंच लंबा और १/४ या १/८ इंच चौड़ा घाव का चिह्न डॉ० स्टीवनसन ने स्वयं सन् १९६४ में देखा था, जिस समय रविशंकर की आयु १३ वर्ष की थी। डा० स्टीवनसन को बताया गया कि यह घाव जन्म से ही रविशंकर के शरीर पर है तथा जन्म के समय वह इससे भी अधिक लंबा था। घाव वाली जगह पर चमड़ी का रंग आसपास की चमड़ी से और अधिक गहरा था तथा छुरी से किये हुए घाव की तरह स्पष्ट दिखाई देता था। रविशंकर के कथनानुसार पूर्वजन्म में उसकी शस्त्र द्वारा गर्दन काटकर हत्या की गई थी।

पूर्वजन्म में शरीर पर हुए चिह्न वर्त्तमान जन्म में शरीर पर उसी प्रकार और उसी स्थान पर पाये जायँ—यह एक बहुत ही अद्भुत एवं विचित्र बात है। ऐसे चिह्नों की शरीर-शास्त्र संबंधी सामान्य वैज्ञानिक जानकारी के आधार पर कोई व्याख्या संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में पूर्वजन्म के साथ ही उसका संबंध जुड़ता है। यह अवश्य शोध का विषय है कि किस प्रकार आत्मा अपने एक जन्म के शारीरिक चिह्नों को भी दूसरे जन्म में ले जाती है।

जैन दर्शन द्वारा प्रदत्त कर्म-सिद्धांत के आधार पर इस तथ्य की व्याख्या संभवतः इस प्रकार की जा सकती है—

जैन दर्शन में शरीर संबंधी समस्त निर्माण का मूल कारण नाम-कर्म है। नाम-कर्म की प्रकृतियों में संघातननामकर्म, निर्माणनामकर्म तथा आनुपूर्वीनामकर्म के द्वारा उक्त तथ्य की व्याख्या हो सकती है। औदारिक आदि शरीरनामकर्म के उदय से औदारिक आदि वर्गणा के पुद्गलों का ग्रहण होता है, बन्धननामकर्म के उदय से गृहीत पुद्गल के साथ गृह्यमाण पुद्गल का संमीलन होता है, तथा संघातननामकर्म

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के उदय से औदारिक आदि वर्गणा के पुद्गलों की औदारिकादि शरीर के रूप में विशेष रचना होती है।[1] आचार्य हरिभद्र के अनुसार—बद्ध पुद्गलों के परस्पर जतुकाष्ठन्याय से रचना-विशेष को संघात कहते हैं। यह पुद्गलविपाकी कर्म है, क्योंकि पुद्गल रचना के आकार-विशेष के द्वारा इसका परिपाक होता है।[2]

आनुपूर्वीनामकर्म के अर्थ के विषय में दो परम्पराएं प्रचलित हैं। एक के अनुसार विग्रहगति में आत्म प्रदेशों के रचनाक्रम को, जोकि पूर्व-शरीर के अनुसार होता है, करने वाले कर्म को अनुपूर्वी नामकर्म कहा है।[3] दूसरी परम्परा के अनुसार—जिसके उदय से निर्माण-नामकर्म के द्वारा निर्मापित बाहु आदि अंग तथा अंगुली आदि उपांगों की रचना की परिपाटी होती है, उसे आनुपूर्वीनामकर्म कहा जाता है।[4] पूर्वजन्म के शरीर के अनुसार विग्रहगति में आत्म-प्रदेशों की आकार-रचना तो आनुपूर्वीनामकर्म के द्वारा होती ही है, पर उसके पश्चात् भी वर्त्तमान शरीर के निर्माण में पूर्व-शरीराकार का प्रभाव भी आनुपूर्वीनामकर्म के माध्यम से कार्य करता है। उपघातनामकर्म शरीर के अंगों-पांगों के उपघात का कारण है, उसकी भी पुनरावृत्ति दूसरे जन्म में यथावत् हो सकती है।[5] इस प्रकार विग्रहगति के पश्चात् भी यदि आनुपूर्वीनामकर्म के द्वारा वर्त्तमान शरीर के निर्माण में योगदान मिलता है, तो पूर्व-शरीर के चिह्नों की पुनर्जन्म में भी विद्यमानता संभव हो जाती है।

मृत शरीर का अधिग्रहण :

पूर्वजन्म की घटनाओं में कुछ ऐसी घटनायें भी सामने आई हैं, जिनमें एक मृत व्यक्ति के शरीर में दूसरे मृत व्यक्ति की आत्मा प्रवेश कर जाती है और वह मृत व्यक्ति पुनः जीवित हो जाता है, पर अब वह अपने आपको दूसरी आत्मा के रूप में बताता है। जैसे—जसवीर नामक बालक की घटना में घटित हुआ। रसुलपुर नामक गांव में गिरधारीलाल जाट का पुत्र जसवीर लगभग साढ़े तीन वर्ष की आयु में चेचक की बीमारी में सन् १९५४ के गर्मी के मौसम (अप्रैल-मई) में मृत्यु को प्राप्त हुआ। मृत बच्चे की अन्तक्रिया रात्रि का समय होने से प्रातःकाल तक स्थगित रखी गई। मृत्यु के कुछ घण्टों बाद ही शव में थोड़ी-सी हलचल नजर आई। कुछ क्षणों पश्चात् लड़का पुनः जीवित हो गया। पर अब तक बोलने की स्थिति में नहीं था। कुछ दिनों बाद जब वह बोलने की शक्ति को प्राप्त कर चुका था, उसने बताया कि—मैं वेहेदी ग्राम के निवासी शंकर नामक ब्राह्मण का पुत्र हूं और इसलिए मैं जाटों के हाथ का खाना नहीं खाऊंगा। जसवीर ने यह भी बताया कि पिछले जन्म में उसकी मृत्यु तब हुई थी जब वह दो बैलों के रथ पर किसी बरात में जा रहा था जहां उसे विषैली मिठाई दे दी गई थी। वह मिठाई उसे उस व्यक्ति ने खिलाई थी जिसको उसने कुछ धन ऋण में दिया था। जब वह रथ में बैठकर जा रहा था, अचानक उसे चक्कर आये, वह रथ से गिर गया और उसके सिर में चोट आई जिससे कुछ घण्टों बाद उसकी मृत्यु हुई।

जसवीर द्वारा बताई गई इन बातों को गिरधारीलाल ने छिपाने की कोशिश की, पर उसके द्वारा ब्राह्मण के हाथों बनाया हुआ खाना खाने के आग्रह के कारण वह बात ब्राह्मणों में फैल गई। लगभग तीन वर्ष पश्चात् यह बात किसी माध्यम से वेहेदी गांव तक पहुंची। बालक जसवीर द्वारा बताई गई बातें वेहेदी गांव के शंकरलाल त्यागी नामक ब्राह्मण के पुत्र शोभाराम के जीवन से हूबहू मिलती थी। शोभाराम की मृत्यु सन् १९५४ में मई महीने में ठीक उसी प्रकार रथ में से गिर जाने के कारण सिर में चोट आने से हुई थी, जैसे बालक

---

१. "संघातनामकर्म—औदारिकादि शरीरनामकर्मण औदारिकादिवर्गणा गृह्यन्ते, बन्धनामकर्मोदयाच्च गृह्यमाणपुद्गलाः गृहीतपुद्गलैः सह संमील्यन्ते, संघातनाम-कर्मोदयात्—चौदारिकादिपुद्गलानामौदारिकादिशरीरविशेषरचनासंहतिर्भवति।" —बंधविहाणं, खण्ड-९, पृ० ४४

२, "बद्धानामपि च पुद्गलानां परस्परं जतुकाष्ठन्यायेन पुद्गलरचनाविशेषः सघातः संयोगेनात्मनः गृहीतानां पुद्गलानां यस्य कर्मण उदयाद् औदारिकादि तनुविशेष-रचना भवति, तत् संघातनामकर्म, पुद्गलरचना विपच्यत इति पुद्गलविपाकीत्युच्यते।"

३. "यत्पूर्वशरीराकाराविनाशो यस्योदयात् भवति, तदनुपूर्व्यनाम। यदा छिन्नायुर्मनुष्यस्तिर्यग् वा पूर्वेण शरीरेण वियुज्यते, तदेव नरक-भवं प्रत्यभिमुखस्य तस्य पूर्वशरीरसंस्थानानिवृत्तिकारणं विग्रहगतावुदेति, तन्नरकगति प्रायोग्यानुपूर्व्यनाम। एवं शेषेष्वपि योज्यम्। ननु च तन्निर्माणनामकर्मसाध्यं फलं, नानुपूर्व्यनामो-दयकृतग् ?नैष दोषः, पूर्वायुरुच्छेदसमकाल एवं पूर्वशरीरनिवृत्ता निर्माणनामोदयो निवर्तते तस्मिन्निवृत्तेऽष्टविधकर्म तैजसकार्मणशरीरमसंबंधिन आत्मनः पूर्वशरी-रसंस्थाना विनाशकारणमानुपूर्व्यनामोदयमुपैति, तस्य कालौ विग्रहगतौ जघन्येनैकः समयः, उत्कर्षेण त्रयः समयः, ऋजुगतौ तु पूर्वशरीराकारविनाशे सति उत्तर-शरीर-योग्यपुद्गलग्रहणान्निर्माणनामकर्मोदय व्यापारः।" इति। याऽत्र निर्माणनामकर्मण उदयनिवृत्तिरुक्ता सा चिन्त्या निर्माणकर्मणो ध्रुवोदयत्वात्। —तत्त्वार्थराजवार्तिक; बंधविहाणं, खण्ड ९, पृ० ४७

४. (क) "यदुदयाद् निर्माणनामकर्मणा निर्मापितानां बाहु-प्रत्यंगनां अंगुल्याद्युपांगनां रचना निवेशपरिपाटी—उभयतो बाहु कटेरधो जानुनी इत्यादि, अत्रैव स्थाने इदं विनेष्टव्यमित्येवंरूपा जायते तदानुपूर्वीनाम।" —बंधविहाणं, खण्ड ९, पृ० ४७

(ख) "जस्स कम्मसुदएण परिचत्तपुव्वसरीस्स अ (ग) हिदु उत्तरसरीरस्स जीवपदेसाणं रचणापरिवाडी होदि तं कम्ममाणुपुव्वीणाम।',—धवलाकार। "धवला-कारस्तु विग्रहगता आत्मप्रदेशानां रचनाक्रममानुपूर्वीनाम प्रचक्षते। —बंधविहाणं, खण्ड ९, पृ० ४७

५. "शरीररांगानामुपांगानां च यथोक्तानां यस्य कर्मण उदयात् परैरनेकधोपघातः क्रियते, तदुपघातनामेति।" —तत्त्वार्थसूत्रवृत्ति; बंधविहाणं, खण्ड ९, पृ० ४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जसवीर ने बताया, हालांकि विषैली मिठाई और ऋण की बात का उसके परिवार वालों को कोई पता नहीं था।

डॉ० स्टीवनसन ने इस सारी घटना की बहुत ही सूक्ष्मता से जांच की है तथा सारी घटना की यथार्थता को असंदिग्ध माना है। शोभाराम और जसवीर की लगभग एक ही समय में मृत्यु होना, और शोभाराम की आत्मा के द्वारा जसवीर के मृत शरीर में पुनर्जन्म लेना तथा शोभाराम के रूप में अपने पूर्वजन्म की स्मृति को बनाए रखना---पुनर्जन्म संबंधी घटनाओं में एक विलक्षण घटना है। मृत्यु के पश्चात् नए जन्म के लिए सामान्य रूप से आत्मा स्वयं अपने नए देह का निर्माण करता है और निश्चित समय तक गर्भस्थ रहने के पश्चात् ही माता के उदर से बाहर आकर अपने नये जीवन का प्रारंभ करता है। उक्त घटना में शोभाराम द्वारा सीधे ही जसवीर के मृत शरीर में जन्म लेना—इस सामान्य क्रम से नितांत भिन्न एवं विलक्षण क्रम है। यद्यपि पुनर्जन्मवाद को स्वीकार करने वाले धर्म-दर्शनों में भी ऐसे क्रम के विषय में संभवतः कोई व्याख्या नहीं मिलती, फिर भी जैन आगम **भगवती सूत्र** में आये हुए प्रवृत्य परिहार (या पोट्ट परिहार) नामक सिद्धांत में इसकी चर्चा मिलती है। वहां आजीवक सम्प्रदाय के अधिनायक गोशालक द्वारा इसका प्रतिपादन किया गया है। गोशालक भगवान् महावीर के प्रवचनों का प्रतिवाद करता हुआ यह प्रतिपादित करता है कि वह गोशालक नहीं है, जिसने महावीर के पास दीक्षा ग्रहण की थी, वरन् वह गोशालक के मृत शरीर में जन्म लेने वाला गौतम-पुत्र अर्जुन है। भगवान् महावीर गोशालक के इस कथन को असत्य घोषित करते हैं,[1] यद्यपि गोशालक की अपनी बात असत्य थी, फिर भी इससे इस प्रकार की जन्म-प्रक्रिया की संभावना को सर्वथा निषिद्ध तो नहीं माना जा सकता। यह अवश्य गवेषणा का विषय है कि जैन दर्शन इस प्रकार के जन्म की व्याख्या किस प्रकार प्रस्तुत करता है।

वनस्पतिकाय में पोट्ट परिहार होता है, यह सिद्धांत तो स्वयं भगवान् महावीर द्वारा माना गया है। गोशालक और तिल के पौधे की घटना के संदर्भ में स्वयं भगवान् महावीर कहते हैं-- 'गोशालक! यह तिल का पौधा फलित होगा, तथा ये सात तिलपुष्प के जीव मरकर इसी पौधे की एक तिलफली में सात तिल होंगे···"···वे सात तिलपुष्प के जीवन मरकर उसी पौधे की एक तिलफली में सात तिल हो गये हैं। इस प्रकार हे गोशालक! वनस्पतिकाय के जीव 'प्रवृत्य परिहार' (पोट्ट-परिहार) का उपभोग करते हैं—मरकर पुनः उसी शरीर में उत्पन्न हो सकते हैं।[2]

भगवती सूत्र के उक्त प्रसंग के संदर्भ में आगे भगवान् महावीर कहते हैं--'तत्पश्चात् गोशालक ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया। वह तिल के पौधे के पास गया और उस फली को तोड़कर तथा हथेली पर मसलकर तिल गिनने लगा। गिनने पर तिल सात ही निकले। इससे उसके उन में विचार उत्पन्न हुआ—"यह निर्विवाद बात है कि सर्व प्राणी मरकर पुनः उसी शरीर में ही उत्पन्न होते हैं। गोशालक का यही 'प्रवृत्यपरिहारवाद' या परिवर्तनवाद है।"[3]

भगवती सूत्र में केवल यही बताया गया है कि गोशालक ने सभी जीवों में पोट्ट परिहार का सिद्धांत बना लिया था जिसके अनुसार सभी जीवों के लिए निर्वाण से पूर्व सात जन्मों में पोट्ट परिहार करना अनिवार्य माना गया। पर इससे यह अर्थ तो नहीं निकलता कि

---

१. जे णं स गोसाले मंखलिपुत्ते तव धम्मंतेवासी सेणं सुक्के सुक्काभिजाइए भवित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, अहण्णं उदाई नामं कुडियायणीए अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहाभि, विप्पजहित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि।
से णं अहं कासवा! तए णं अहं आउसो कासवा! कौमारियपव्वज्जाए कोमारएणं बंभचेरवासेणं अविद्धकण्णए चेव संखाण पडिलभामि, पडिलभित्ता इमे सत्त पउट्टपरिहारे परिहरामि, तं जहा—१. एणेज्जस्स २. मल्लरामस्स ३. मंडियस्स ४. रोहस्स ५. भारद्दाइस्स ६. अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स ७. गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स।
तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—गोसाला! से जहानामए तेणए सिया, गामेल्लएहि परब्भमाणे परब्भमोणे कत्थ य गड्डं वा दरिं वा दुग्गं वा णिण्णं वा पच्चयं वा विसमं वा अणस्सादेमाणे एगेणं महं उण्णालोमेण वा समलोमेण वा कप्पासपम्हेण वा तणसुएण वा अत्ताणं आवरेत्ताणं चिट्ठेज्जा, से णं अणावरिए आवरियमिति अप्पाणं मण्णइ, अप्पच्छण्णे य पच्छण्णमिति अप्पाणं मणइ, अणिलुक्के णिलुक्काभिति अप्पाणं मणइ, अपलाए पलायभिति अप्पाणं मण्णइ एवामेव तुमं पि गोसाला। अणण्णेसंते अण्णभिति अप्पाणं उपलभसि तं मा एवं गोसाला! नारिहसि गोसाला! सच्चेव ते सा छाया, नो अण्णा।

—भगवती सूत्र, १५/१०१, १०२

२. गोसाला! एस णं तिलथंभए णिप्फज्जिसइ, नो न निप्फज्जिसइ। एते य सत्ततिल पुप्फजीवा उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाइस्संति।···
ते मे सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभगास्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया। एवं खलु गोसाला! वणस्सइकाइया पउट्टपरिहारं परिहरंति। —भगवती सूत्र, १५/५८,७३

३. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स से सत्त तिले गणमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पाज्जत्था एवं खलु सव्वजीवा वि पउट्टपरिहारं परिहरंति—"एस णं गोयमा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स पउट्टे, एस णं गोयमा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमणे पण्णते।" —भगवती सूत्र, १५/७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान् महावीर वनस्पतिकाय के अतिरिक्त अन्य जीवों में पोट्ट परिहार के सिद्धांत को गलत मानते थे। **भगवती सूत्र** के आधार पर ये बातें स्पष्ट होती हैं—

१. गोशालक ने अपने आपको जो गोतमपुत्र अर्जुन के जीव का गोशालक के शरीर में पोट्ट परिहार बताया था, वह असत्य था।

२. गोशालक ने सभी जीवों में पोट्ट परिहार की अनिवार्यता बताई थी, वह असत्य था।

३. वनस्पतिकाय में पोट्ट परिहार की संभाव्यता को महावीर ने स्वीकार किया था।

४. अन्य जीवों में भी पोट्ट परिहार संभव हो सकता है, इसका खण्डन महावीर ने कहीं नहीं किया।

उक्त तथ्यों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि वनस्पतिकाय की तरह अन्य जीवयोनियों में भी पोट्ट परिहार संभव है। इस बात की पुष्टि **भगवती सूत्र** के एक अन्य पाठ से इस प्रकार होती है—

भगवान् महावीर ने मनुष्यणी के गर्भकाल को जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट १२ वर्ष बताया है।[१] कायभवस्थ का काल जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट चौबीस वर्ष बताया है।[२] वृत्तिकार इसकी व्याख्या में स्पष्ट रूप से कहते हैं कि एक जीव गर्भ में १२ वर्ष तक रहकर मृत्यु को प्राप्त होकर पुनः उसी शरीर में उत्पन्न हो सकता है और दूसरी बार फिर १२ वर्ष और रह सकता है।[३] इस प्रकार मनुष्य शरीर में भी पोट्ट परिहार को स्वीकार किया गया है। सिद्धांत की दृष्टि से यदि वनस्पतिकाय में पोट्ट परिहार हो सकता है, तो मनुष्य-शरीर में भी हो सकता है।

अस्तु, यहां यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ऐसी घटना में भी सामान्य मनोविज्ञान के सिद्धांत या अन्यान्य परिकल्पनाएं व्याख्या करने में अक्षम ही रह जाते हैं। केवल पुनर्जन्मवाद ही इसकी व्याख्या न्यूनतम स्वयं तथ्यों (Minimum assumptions) के आधार पर कर सकता है।

उपसंहार :

डॉ० स्टीवनसन ने अपने विशाल ग्रन्थ के उपसंहार में लिखा है—

"I believe, however, that the evidence favouring reincarnation as a hypothesis for the cases of this type has increased since I published my review in 1960. This increase has come from severel different kinds of observations and cases, but chiefly from the observations of the behaviour of the children climing the memories and the study of cases with specific or idiosyncratic skills and congenital birthmarks and deformities."

"......In the cases of the present collection, we have evidence of the occurrence of patterns which the present personality is not known to have inherited or acquired after birth in the persent life. And in some instances these patterns match corresponding and specific features of an identified deceased personality. In such cases we have then in principle, I believe, some evidence for human survival of physical death."[४]

डॉ० स्टीवनसन के उक्त अभिमत के समर्थन में उनकी उक्त पुस्तक के भूमिका लेखक सी० जे० ड्यूकास[५] ने और भी अधिक स्पष्ट एवं तर्कसंगत शब्दों में लिखा है[६]—

"If, then, one asks what would constitute genuine evidence of reincarnation, the only answer in sight seems to be same as to the question how any one of us now knows that he was living some days, months

---

१. "मणुस्सी गब्भे णं भंते। मणुस्सी गब्भेत्ति कालओ केवच्चिर होइ?"
"गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण बारस संवच्छराइ।" —भगवती सूत्र, २/५/८३

२. "कायभवत्थे णं भंते! कायभवत्थेत्ति कालओ केविच्चिरं होइ?"
"गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउव्वीसं संवच्छराइ।" —भगवती सूत्र (अभयदेववृत्ति सहित) २/५/१०२

३. काये—जनन्युदरमध्यव्यवस्थितनिजदेह एव यो भवो—जन्मो स कायभवस्तत्र तिष्ठति यः स कायभवस्थः, इति, एतेन पर्यायेणत्यर्थः। "चउव्वीसं संवच्छराइ" त्ति स्त्रीकाये द्वादशवर्षाणि स्थित्वा पुनर्मृत्वा तस्मिनन्नेवात्मशरीरे उत्पद्यते द्वादशवर्षस्थितिकतया, इत्येवं चतुर्विंशति वर्षाणि भवन्ति। केचिदाहु—द्वादशवर्षाणि स्थित्वा पुनस्तत्रैवान्यबीजे न तच्छरीरे उत्पद्यते द्वादशवर्षस्थितिरिति —भगवती सूत्र, २/५/१०२ पर वृत्ति

४. Twenty Cases Suggestive of Reincarnation, पृ० ३५१, ३५३

५. अमेरिकन सोसायटी फॉर सायकिकल रिसर्च के प्रकाशन समिति के अध्यक्ष

६. Twenty Cases Suggestive of Reincarnation, Foreword, पृ० ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

or years before. The answer is that he now remembers having lived at that earlier times, in such a place and circumstances, and having done certain things then and had certain experiences."

"But does anybody now claim similarly to remember having lived on earth a life earlier than his present one ?"

"Although reports of such a claim are rare, there are some. The person making them is almost always a young child from whose mind these memories fade after some years. And when he is able to mention detailed facts of the earlier life he asserts he remembers, which eventual investigation verifies but which he had no opportunity to learn in a normal manner in his present life, then the question with which this confronts us is how to account for the veridicality of his memories, if not by supposing that he really did live the earliar life he remembers."

पूर्वभव स्मरण

शरीर ही मरता है और नया उत्पन्न होता है, आत्मा न मरता है न जन्म लेता है। वह तो जन्म लेने वाले नये शरीर में नये किरायेदार की तरह रहने लगता है इसी कारण किसी-किसी मनुष्य को अपने पहले जन्म की अनेक बातें दूसरे जन्म में स्मरण हो आती हैं।

लगभग १५-१६ वर्ष पहले दिल्ली में एक ६-८ वर्ष की शान्तिदेवी नामक लड़की थी, वह अपने माता-पिता से कहा करती थी कि मैं शीतला घाटी पर मथुरा में रहती थी, एक दिन दिल्ली में आये हुए एक कथा वाचक ब्राह्मण को पहचान लिया कि आप हमारे शीतला घाटी मुहल्ले में भी कथा करने आते थे। इस पर लोगों का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट हुआ। तब उस लड़की को मथुरा ले गये, स्टेशन पर उसे छोड़ दिया गया वह अपने आप शीतला घाटी पहुंची और अपने पहले जन्म के मकान में घुस गई। वहां उसने अपने पूर्वभव के पुत्र, पति आदि को पहचान लिया। और अपने कोठे के कोने में कुछ रुपये गाड़ रखे थे वे भी खोदकर निकाल दिखाये। जिससे यह बात सिद्ध हो गई कि उस लड़की को अपने पहले जन्म की घटना सत्य याद थी।

ऐसे पूर्वभव के स्मरण वाली अनेक घटनायें प्रकाशित हुआ करती हैं। इससे सिद्ध होता है कि जीव अपने संचित किए हुए कर्मों के अनुसार दूसरे जन्म में सुख दुःख भोगा करता है। इसी तरह ये जीव अनादि काल से जन्म मरण करते हुए चले आ रहे हैं।

अनेक स्त्री पुरुषों को कभी-कभी भूत, प्रेत, बाधा सताया करती है जिसमें वे अपने पूर्वभव की घटनायें बतलाते हैं तथा वर्त्तमान में अपना जन्म व्यन्तर आदि देवों में बतलाते हैं इससे यह बात प्रमाणित होती है कि मनुष्य और पशु योनि के सिवाय देवयोनि भी है।

इस प्रकार धार्मिक मनुष्य, पुनर्जन्म, स्वर्ग, नरक, मोक्ष, पुण्य, पाप, कर्म का फल आदि बातों में अपनी आस्तिकता प्रकट करते हुए पाप कार्यों से बचते रहते हैं।

—आचार्य रत्न श्री देशभूषण, उपदेशसार संग्रह, द्वितीय भाग जयपुर, १९८२, पृ० १०० से उद्धृत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org